एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

वाणिज्यिक टर्की पालन

(*केशराम मीना)
राजस्थान कृषि महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय- उदयपुर (राजस्थान)
*संवादी लेखक का ईमेल पता: sattawankeshram@gmail.com

टर्की पालन भारत में मुर्गी पालन का एक व्यवहार्य विकल्प है और वाणिज्यिक टर्की की खेती भारत में तेजी से लोकप्रिय हो रही है। टर्की का उपयोग वाणिज्यिक अंडे और मांस उत्पादन के साथ–साथ पालतू जानवरों के रूप में रखने के लिए भी किया जा सकता है। टर्की पालन का व्यवसाय एक मुनाफे का व्यवसाय बनकर उभरा है। देश के किसान पशुपालन मुर्गी पालन के बाद अब टर्की पालन का व्यवसाय भी करने लगे हैं।

आजकल टर्की पालन का व्यवसाय एक मुनाफे का व्यवसाय बनकर उभरा है। देश के किसान पशुपालन मुर्गी पालन के बाद अब टर्की पालन का व्यवसाय भी करने लगे हैं। टर्की का मांस बहुत ही स्वादिष्ट और औषधीय गुणों से भरपूर होता है। टर्की का मांस में ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम होने के कारण यह मधुमेह रोगी के लिए बहुत उपयोगी है। इसके मांस में अमीनो अम्ल, नियासिन, विटामिन–बी जैसे विटामिन भरपूर मात्रा में पाया जाता है। इसे मुख्य रूप से मांस और अंडा के लिए पाला जाता है।

टर्की के अवशिष्ट (मल) से खाद भी तैयार की जाती है, जो खेती के लिए उपजाऊ होती है। टर्की पक्षी को आप आसानी से घर या खेत पर कम जगह में पाल सकते हैं। इनका कुछ खास ख्याल भी नहीं रखना पड़ता है। टर्की पालन की शुरुआत छोटे से स्तर से भी की जा सकती है।

प्रमुख प्रजातियां

भारतीय जलवायु के अनुसार ब्रॉड ब्रेस्टेड ब्रॉन्ज, नंदनम टर्की–1, ब्रॉड ब्रेस्टेड सफेद, बेल्सविले छोटा सफेद आदि किस्में उपयुक्त हैं, इन प्रजातियों का पालन कर सकते हैं। इन्हें खुली जगह जैसे घर, खेत आदि पर आसानी से पाल सकते हैं।

टर्की पालन के लिए जगह का चुनाव

टर्की को मुर्गी या बटेर पालन की ही तरह कम जगह या घर के पास बने शेड में पाल सकते हैं। 250–300 वयस्क टर्की पालन के लिए 100 वर्ग फीट की जरूरत होती है।

टर्की पालन में ध्यान रखने योग्य बातें

- रात के आराम के लिए 3–4 वर्ग फीट प्रति पक्षी आश्रय दें।
- बाड़े में छायादार वृक्ष लगाकर पक्षी को ठंडा वातावरण दें।
- छोटे स्तर पर टर्की पालन के लिए 15 वर्ग फीट प्रति पक्षी जमीन रखें।
- इन्हें घर/खेत में खुले स्थान पर छोटे कीड़े, दीमक, घोंघे, केंचुए, घास, रसोई अवशिष्ट और दाने आदि खिला सकते हैं।
- चूजों को 4 सप्ताह के बाद आहार में दूब शामिल किया जा सकता है।

टर्की पालन में कमाई और लागत

टर्की का शरीर तेजी से विकसित होता है। मात्र 7 से 8 माह में इसका वजन 10 से 12 किलो तक हो जाता है जो अन्य पक्षियों से काफी अधिक है। इसके अंडे का वजन भी मुर्गी के अंडे से अधिक होता है। टर्की से प्रतिवर्ष 110 से 130 अंडे प्राप्त किए जा सकते है।

मादा एक साल में करीब 50 से लेकर 60 चूजे तक देती है। ये 24 सप्ताह बाद अंडा देने के लायक हो जाते हैं। 14–15 सप्ताह में बेचने योग्य हो जाते हैं। इन दिनों मार्केट में टर्की की मांग बहुत

अधिक है। जिसके कारण टर्की पालन से अच्छी कमाई हो जाती है। लागत की बात करें तो 100 टर्की पालन में करीब 5 से 6 हजार रुपए का खर्चा आता है।

टर्की बहुत अधिक मांस का उत्पादन करता है, जो व्यवसाय के लिए अच्छा है। ब्रायलर मुर्गियों और सूअरों की तरह, वे तेजी से विकास होता हैं। भारत में मौसम और अन्य परिस्थितियाँ टर्की की खेती के लिए आदर्श हैं। सही देखभाल और प्रबंधन प्रदान करके भारत में वाणिज्यिक टर्की की खेती से उत्पादन और लाभ बढ़ा सकते हैं।

इष्टतम टर्की विकास और प्रबंधन के लिए अच्छा आवास आवश्यक है। टर्की को सघन और फ्री रेंज सिस्टम दोनों में पाला जा सकता है। क्योंकि टर्की आकार में आम तौर पर बड़े होते हैं, पिंजरा पालना उनके लिए कोई विकल्प नहीं है। अधिकांश किसान उन्हें गहरे कूड़ेदान प्रणाली में पालते हैं।

फ्री रेंज टर्की पालन प्रणाली में एक एकड़ क्षेत्रफल की बाड़ वाली भूमि में लगभग 250 से 300 टर्की रख सकते हैं। इस प्रणाली में, रात्रि आश्रय के लिए प्रति पक्षी 3–4 वर्ग फुट कमरा उपलब्ध कराना होगा। आप टर्की को उसी तरह से पाल सकते हैं जिस तरह से आप डीप लिटर टर्की फार्मिंग पद्धति में मुर्गियां पालते हैं।

पक्षियों को दाना डालना

स्वस्थ और पौष्टिक भोजन खिलाने से उचित वृद्धि और उत्पादन सुनिश्चित होता है। फलस्वरूप, टर्की को अच्छी तरह से संतुलित और स्वस्थ आहार प्रदान करना महत्वपूर्ण है। एक किलोग्राम वजन बढ़ाने के लिए, टर्की को लगभग 3.25 किलोग्राम फ़ीड की आवश्यकता होती है। आप अपने टर्की को बाजार में मिलने वाला पोल्ट्री/चिकन फीड आसानी से खिला सकते हैं। हालांकि, आपको कुक्कुट खाद्य को अतिरिक्त प्रोटीन के साथ पूरक करना चाहिए। एक अच्छी तरह से संतुलित और पौष्टिक आहार देने के साथ–साथ उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त ताजा और साफ पानी उपलब्ध कराने का हर संभव प्रयास करें।

देखभाल और प्रबंधन

उचित देखभाल और प्रबंधन से बेहतर उत्पादकता सुनिश्चित की जा सकती है। घरेलू टर्की अन्य घरेलू पक्षियों के समान हैं। वे कई तरह की बीमारियों और परजीवियों से ग्रस्त हैं। टर्की में गोल कृमि और फाउल माइट सबसे अधिक पाए जाने वाले परजीवी हैं। कुछ समय बाद पक्षियों को स्वस्थ रखने और उन्हें बढ़ने में मदद करने के लिए डिप और कीटाणुनाशक देंद्य

टर्की विभिन्न प्रकार के फंगल, जीवाणु और वायरल बीमारियों के लिए भी अतिसंवेदनशील होते हैं। फाउल हैजा, विसर्प, ब्लू कॉम्ब डिजीज, कोकिडियोसिस, न्यू कैसल डिजीज, एरिजोनोसिस, क्रॉनिक रेस्पिरेटरी डिजीज, पैराटायफॉइड, टर्की सोरिजा, टर्की वेनेरियल डिजीज और अन्य बीमारियां टर्की के लिए हानिकारक हैं। समय पर टीकाकरण और अच्छी देखभाल से पक्षियों को स्वस्थ और रोग मुक्त रखा जा सकता है।

टीकाकरण

टीकाकरण की शुरुआत न्यू कैसल डिजीज– बी1 स्ट्रेन से होती है। उसके बाद 4 वें और 5 वें सप्ताह में फाउल पॉक्स का टीका लगाया जाता है। छठवें सप्ताह में, न्यू कैसल रोग– (त्2ठ) का टीका दिया जाता है और अंत में 8वें से 10वें सप्ताह में हैजा का टीका दिया जाता है।

पक्षी विपणन

भारत में टर्की पालन और मांस की खपत बढ़ रही है। 24 सप्ताह की आयु के भीतर, एक नर टर्की सही देखभाल और पर्यवेक्षण के साथ खाने के योग्य हो जाता है। इस उम्र में इनका वजन लगभग 10 से 15 किलो होता है। मादा टर्की, नर टर्की की तुलना में थोड़ा अधिक समय लेती हैं और वजन थोड़ा कम होता है। टर्की सामान्य तौर से हर जगह बेचा जा सकता है। आपके पास अपने स्थानीय बाजार या देश के किसी भी बड़े सुपरमार्केट में बेचने का विकल्प है।